जहां कविता खत्म होती है

(अपने गांव के अनपढ लड़कों के नाम)

उछल-कूद की उम्र में
जो हल के पीछे लगकर
आप बच्चों का काम कर लेते हो
और कोमल सपनों को
बदबू भरे कुर्ते के साथ
बाड़ पर टांग देते हो
कौन लगा सकता है आपकी जीभ को ताला
आप दहाड़ोगे ठर्रे का घूंट पीकर
आप नंगेज निकाल दोगे शब्दों से
आप जा टपकोगे राजा-रानी की कहानी में
फूलों के वजन तौलती राजे की उस बेटी तक
लाठी लगा आगे ले जाने के लिए
केवल चार फ़ोरों के बदले-
जो किस्मतों से संघर्ष की शर्तें रखती है
मेरे दोस्तो, क्या कहूं
बड़ा पुराना है सवालों का वृक्ष
और इसके पत्तों से लाड कर रही है
राजनीति की हवा
और बाकी सबकुछ छोड़ दिया गया है
कुदालों, कुल्हाड़ीवालों की अक्ल पर...
वैसे तो एक सवाल यह भी है
कि सपनों के उड़ रहे राकेट के
साथ-साथ क्यों चलती मसूर की दाल ?
और यह भी कि
क्यों उभर आता है सपनदोष के समय
पिछले साल मर गई पड़िया का बिंब
माफ़ करना मेरे गांव के यारो
कविता लिखनेवाला यह पढाकू लड़का
आपके मसले हल नहीं कर सकता

पांच बार जेल हो आना
या देर शहरों के मंचों पर
पुलिस से खाए डंडों का जिक्र करना
आपकी जल रही दुनिया के लिए
एक सूखे पोखर-जैसा है

कविता आपके लिए
विपक्षी पार्टियों के बेंचों-जैसी है
जो हमेशा आग-आग का शोर मचाते हैं
और आग से खेलने की मनाही के
सामने हमेशा सिर झुकाते हैं
माफ़ करना मेरे गांव के यारो
मेरी कविता आपके मसले हल नहीं कर सकती

मसलों की बात दोस्तो, कुछ ऐसी होती है
कि कविता बिल्कुल नाकाफ़ी होती है
और आप बड़ी दूर निकल जाते हैं-
तीखी चीज़ों की तलाश में
मसलों की बात कुछ ऐसी होती है
कि आपका सब्र थप्पड़ मार देता है
आपके कायर मुंह पर
और आप उस जगह से शुरू करते हैं
जहां कविता खत्म होती है....

- पाश

6 अप्रैल को भी इस गिरोह ने ऐसी ही गुंडागर्दी की थी

पेज एक का शेष

डरे हुए शर्मा जी को राज़ी होने में ही भलाई नज़र आई क्योंकि पुलिस तो कुछ कर ही नहीं रही थी। इस राज़ीनामे की बड़ी बात यह है कि किसी प्रकार के मुआवज़े का लेनदेन नहीं हुआ। और तो और गाड़ियों के स्टीरियों विकास का मोबाइल फ़ोन ढाई तोले की चेन, क्रेडिट कार्ड, शर्मा जी की पत्नी का 6 तोले का मंगलसूत्र आदि जो लूटा गया था वह भी वापस नहीं किया गया। जाहिर है यह राज़ीनामा मजबूरी का था, यानी मरता क्या न करता।

विकास ने बताया कि झगड़े की शुरूआत बहुत मामूली बातों को लेकर हुई थी। शर्मा जी के सामने मकान नं. 1265 है जिसमें कुलदीप भाटी रहते हैं जो मेवला महाराजपुर निवासी सुरजीत बैंसला के दामाद हैं। सुरजीत के और कृष्णपाल के दादा सगे भाई थे। शर्मा व कुलदीप परिवार की कभी किसी बात पर छोटी-मोटी नोक-झोंक हुई होगी जो शर्मा जी को याद भी नहीं; परन्तु कुलदीप ने उसे नाक का प्रश्न बना कर यह कार्यवाही करा दी। अब पूरे समाज व सरकार के लिये समझने वाली बात यह है कि क़ानून कायदे की बजाय अब सभी फ़ैसले इस तरह के बाहुबल एवं गुंडागर्दी से हुआ करेंगे? शान्तिप्रिय नागरिकों के जान-माल की सुरक्षा के लिये बनाई गयी पुलिस अपने ही थाने-चौकियों में आये पीड़ितों की रक्षा करने के बजाय खुद ही पिटने लगेगी तो यह समाज कब तक सुरक्षित रह पायेगा और एक दूसरे से बदला लेने के लिये गुंडा गिरोहों को बनने से कैसे रोका जा सकेगा?

भारतीय मीडिया को नेपाली जनता का पत्र

प्रति भारतीय मीडिया

मैं अपने दिल की गहराइयों से मेरे देश को संकट के वक्त आपके देश द्वारा की गयी मदद के लिये धन्यवाद देना चाहती हूं। सभी नेपाली जो देश के भीतर हैं या बाहर हैं, आपके देश के प्रति शुक्रगुजार हैं।

मैं एक ऐसी नेपाली होने के बावजूद जो अपनी मातृभूमि से दूर हूं, जब आपकी खबरें व रिपोर्टें देखती हूं तो मेरा हृदर चीत्कार उठता है और उससे ज़्यादा घायल होता है जितना 7.9 रिक्टर स्केल के भूकम्प की तबाही से हुआ था। जैसा कि सभी मेडिकल पर्सनलों को भविष्य की आपदा के लिए सिखाया व प्रशिक्षित किया जाता है मैं सोचती हूं कि एक पत्रकार को भी किसी किस्म का प्रशिक्षण दिया जाता होगा कि अलग-अलग घटनाओं की कैसी रिपोर्टिंग करनी चाहिए। आपका मीडिया व मीडिया के लोग इस तरह व्यवहार कर रहे हैं मानो वह किसी पारिवारिक सिरियल की शूटिंग कर रहे हों। अगर आपकी मीडिया के लोग ऐसी जगहों तक पहुंच सकते हैं जहां राहत सामग्री नहीं पहुंची है तो इस संकट के समय क्या उन्हें अपने साथ प्राथमिक उपचार किट, कुछ भोजन सामग्री नहीं ले जानी चाहिए।

एक खबरिया रिपोर्ट प्रसारित की जाती है जहां एक पत्रकार यह दिखाता है कि कैसे लोग भोजन के लिये लड़ रहे हैं और एक महिला बुरी तरह से घायल हो गयी है। ऐसे पत्रकार का धन्यवाद है जिसके पास पीड़ित महिला को थामने और उसके पास कैमरा लाकर यह दिखलाने का पर्याप्त समय है कि महिला का सिर बुरी तरह घायल है, पर कितना आश्चर्यजनक है कि उसके पास एक मिनट का भी समय नहीं है कि वह एक कपड़ा बांध कर महिला का खून बहना रोक दे। उस पत्रकार के पास एक मिनट का भी समय नहीं है कि वह उस व्यक्ति की कलाई पकड़ ले जो दूसरों को अपने हेमलेट से पीट रहा है। निश्चय ही वहां एक कैमरामैन है जो एक सेकण्ड को भी कैमरे को छोड़ना नहीं चाहता ताकि इस नाटकीय खबर को दिखाया जा सके। मैं सोचती हूं कि आप एक मीडिया के व्यक्ति होने से पहले एक इंसान हैं। एक जिम्मेदार व्यक्ति होने के नाते यह आपका कर्तव्य है कि किसी को बचायें।

अगला, वहां एक पत्रकार था जिसके पास राहतकर्मियों से तकनीके के बारे में पूछताछ करने का पर्याप्त वक्त था। अगर आप घटना स्थल पर किसी की जिन्दगी बचा नहीं सकते तो क्या आप कृप्या दूसरों के काम में रुकावट डालना बन्द नहीं कर सकते? ऐसा लगता है कि वह पत्रकार तकनीक की दुनिया में नया है। एक ऐसा शो जिसमें तकनीक का उद्घाटन किया जा रहा हो उसके लिए वह बेहतर मेजबान हो सकता है। उन ढेरों पत्रकारों का धन्यवाद है जो भारत से बचाव विमान के जरिये आये, आपने एक सीट ली। जहां भोजन का एक बैग और सप्लाई रखी जा सकती थी और बुरी तरह प्रभावित क्षेत्रों में भेजी जा सकती थी।

अगला, वहां एक पत्रकार था जिसके पास राहतकर्मियों से तकनीके के बारे में पूछताछ करने का पर्याप्त वक्त था। अगर आप घटना स्थल पर किसी की जिन्दगी बचा नहीं सकते तो क्या आप कृप्या दूसरों के काम में रुकावट डालना बन्द नहीं कर सकते? ऐसा लगता है कि वह पत्रकार तकनीक की दुनिया में नया है। एक ऐसा शो जिसमें तकनीक का उद्घाटन किया जा रहा हो उसके लिए वह बेहतर मेजबान हो सकता है। उन ढेरों पत्रकारों का धन्यवाद है जो भारत से बचाव विमान के जरिये आये, आपने एक सीट ली। जहां भोजन का एक बैग और सप्लाई रखी जा सकती थी और बुरी तरह प्रभावित क्षेत्रों में भेजी जा सकती थी।

एक इंसान होने के नाते अपनी मानवता दिखाइये। इस टेलीविजन की दुनिया में ऐसे पर्याप्त कार्यक्रम हैं जहां लोग नाटकीय शो, पारिवारिक सीरियल, हॉरर शो और बकवास रियलिटी शो देख सकते हैं। आपको इस संकट के समय इसमें और नया कुछ नहीं जोड़ना चाहिए।

आपका कर्त्तव्य एक पत्रकार होने के नाते केवल दृश्यों की तस्वीरें खींचना या लोगों का इंटरव्यू लेना नहीं है। अगर आपकी पहुंच भूकम्प से बुरी तरह प्रभावित क्षेत्रों तक है तो कृप्या कुछ प्राथमिक उपचार पेटी अपने साथ ले जाइये, कुछ भोजन सप्लाई, टेन्ट और पानी अपने साथ ले जाइये। आपको यह नहीं दिखाना है कि कैसे सरकार वहां सप्लाई भेजने में असमर्थ है। कम से कम जब आप वहां पहुंच सकते हैं तो क्यों नहीं आप एक टीम बन जाते हैं। हम नेपाली लोग पहले ही यह देख चुके हैं और इतने वर्षों में अनुभव कर चुके हैं कि हमारी सरकारें कितनी कमज़ोर और स्वार्थी हैं। कम से कम हर किसी को अपना इंसान होने का कर्त्तव्य निभाना चाहिए।

मीडिया एक ताकत है अगर उसे सावधानी पूर्वक इस्तेमाल किया जाए। अन्यथा यह एक हथियार की तरह है जो हज़ारों निर्दोषों लोग़ों को मारता है।

मैं उम्मीद करती हूं कि मेरा संदेश वहां मौजूद सभी पत्रकारों तक पहुंच जायेगा।

धन्यवाद

सुनीता शाक्य

मज़दूर मोर्चा

नियमित रूप से हर माह की पहली व सोलह तारीख को प्राप्त करने के लिए अपने हॉकर से संपर्क करें। कोई दिक्कत होने पर फ़रीदाबाद के पाठक शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर तथा बल्लभगढ़ के पाठक अरोड़ा न्यूज़ एजेन्सी फोन नं 9811477204, करनाल के पाठक अशोक कुमार जैन, फुटवियर जवाहर मार्किट सदर बाजार से फोन नं 9896436739 पर सम्पर्क करें।

फरीदाबाद में अन्य बिक्री केन्द्र :

1. आनंद मैगजीनल सैंटर केसी रोड, एनएच-5,
2. प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,
4. रैंक, 45 नीलम चौक,
5. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,
6. राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,
7. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।
8. जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207
9. पीपीएच बुक शॉप, नियर सैन्ट्रल लाईब्रेरी, न्यू कैम्पस,जे.एन.यू।
10. स्थानीय अदालतों में : चैम्बर नं. 56-एस.के .जोशी - वकील साहब